धर्म जीवन

जनवरी - 2014

* नव वर्ष का आशीर्वाद
* परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 163 वां शुभ जन्म महोत्सव

पेज 20 का बाकी

क्या -क्या फायदा हुआ। सबसे पहले तो मैं मामाजी(श्रीमति विद्यावती जी खेड़ा) का धन्यवाद करना चाहूंगी जिन्होंने मेरे पापा को इस दर से जोड़ा जिसकी वजह से हम लोग भी इस दर से जुड़े हुए हैं और पापों से बचे हुए हैं। और जैसा की आप सब लोग जानते ही हैं कि मेरे पिता जी कच्चा मास और शराब कितने चाव से खाया करते थे, यदि मामा जी ने हमें देवसमाज से न जोड़ा होता तो हम लोग भी आज ऐसे ही होते मगर अब हम लोग बचे हुए हैं। जैसे कि मेरे **friends** वगैरह मीट खाते हैं तो जब उन्हें मना किया जाता है मीट खाना अच्छी बात नहीं है तो वह कहते हैं कि मीट खाना अच्छी बात है, इससे **Ecosystem balanced** रहता है। यदि हम मीट नहीं खाएंगे तो जानवरों की संख्या ज़्यादा हो जाएगी। मगर गुरू महाराज जी ने हमें यह समझाया कि मास खाना तो सबसे बड़ा पाप है। यह कोई खून करने से कम नहीं है। और जो मुझे नज़र आया कि अभी पीछे दीवाली में हम लोग नेपाल गए थे। वहाँ हम पहाड़ों में भी गए थे। जहां पापा का असली गाँव है, वहाँ की **life** इतनी मुश्किल है कि वहाँ पीने के पानी तक के लिए कोई सुविधा नहीं है। वहाँ पानी लेने के लिए इतने मुश्किल रास्ते से होते हुए बिल्कुल नीचे जाना पड़ता है और फिर वापस इतने भारी घड़े लेकर ऊपर चढ़ना पड़ता है। पापा ने हमें उन सब दुखों से दूर यहाँ चण्डीगढ़ में रखा जहाँ हर तरक की **facility** है। हमारे मम्मी-पापा हमें पढ़ाने के लिए इतनी मेहनत करते हैं, वह सुबह सुबह ही काम पर निकल जाते हैं और कभी-कभी तो खाना भी टाईम पर नहीं खा पाते। वह दिनभर काम करके इतने थक जाते है, लेकिन फिर भी अगले दिन फिर काम पर जाते हैं। सिर्फ और सिर्फ हमें अच्छी शिक्षा देने के लिए। मगर फिर हम लोग उनसे लड़ पड़ते हैं। अब जैसे कल ही की बात है जब हम लोग गाड़ी में घर को जा रहे थे, तो कुछ बात हुई और मैं मम्मी से नाराज़ हो गई और मैनें उन्हें ऐसा कहा कि आप बात तो सुनते नहीं ऐसे ही बोलने लग जाते हो। गुरू महाराज जी कि वजह से आज हमें यह थोड़ा-थोड़ा नज़र आता है कि हम लोग अपने ही उपकारी को कितना दुख पहुंचाते हैं।

धन्यवाद

कल्याण सत्संग

पाठकगण नोट फरमाऐं कि कल्याण (बठिंडा) के स्थान पर हर साल की तरह इस साल भी खास सत्संग एवं माता-पिता दिवस मनाया जाएगा। यह सत्संग 28 फरबरी 2014 की शाम से आरम्भ होगा। इस में शामिल होकर लाभ उठाने की कृपा करें।

(मंत्री)

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 1
जनवरी – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नव वर्ष का आशीर्वाद

प्रिय पाठको, श्रद्धालुओं और सेवको! आज इस नए वर्ष में मैं तुम्हें एक बार फिर सम्बोधन करता हूं। मैं अपनी सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा तुम्हारे स्थूल शरीरों के भीतर से गुज़र कर तुम्हारे अन्तर आत्माओं को देखता हूं, और जानना चाहता हूं, कि उन की अवस्था क्या है। एक वर्ष का जो काल व्यतीत हो चुका है, उस में तुम में से हर एक ने अपने अपने आत्मा के सम्बन्ध में कहां तक प्रकृत बोध और उसके बनने वा बिगड़ने, विकास वा विनाश के विषय में वह ज्योति लाभ की है, कि जिस में अपने अपने आत्मा को पहचानना और उनकी नीच गतियों से रक्षा करना और उस में एक वा दूसरा उच्च वा धर्म्म भाव उत्पन्न करके उसे उच्च बनाना तुम्हारे लिए मुख्य उद्देश बन गया है। मैं जब तुम्हारे लिए पूर्ण हित्त भाव से परिचालित होकर तुम्हारे आत्माओं की अवस्था को अपनी सूक्ष्म-दृष्टि से देखता हूं, तो क्या पाता हूं, कि तुम में से बहुत से तो ऐसे हैं, कि जो यद्यपि अधर्म-उत्पादक कई एक मोटे मोटे पापों से वृत हो चुके हैं, परन्तु उच्च ज्योति के विचार से बिलकुल अन्धकार से आवृत हो रहे हैं। और यद्यपि तुम में से कितने हि ऐसे हैं, कि जो मोटे मोटे पापों से शायद सदा के लिए बचे रहने की योग्यता रखते हैं, परन्तु तुम में उन जनों की भी कमी नहीं हैं, कि जो देव समाज के नाना प्रकार के उच्च असरों से दूर होकर फिर इस अवस्था से भी पतित हो जाने का मैलान रखते हैं। और वह जो इस प्रकार पतित होने से बचे भी रहे हैं, वह मेरी उस महा कल्याणकारी धर्म ज्योति से खाली हैं, कि जो जड़ शरीर और शक्तिमय आत्मा के अन्तर को दिखाती है, जो इस भेद को सच्चे रूप में दिखाकर आत्मा के जीवन की रक्षा और उन्नति को सार और मुख्य अनुभव कराती है, अर्थात् जिन जिन वासनाओं के सुखों के मोह में आत्मा फंसा हुआ है और ऐसे सुखों का दास बन रहा है, और जिन जिन उत्तेजना और अंह आदि शक्तियों के अधिकार में रहकर अपने नाना सम्बन्धों में नाना प्रकार की नीच गतियों ग्रहण

करके प्रति दिन अपने सौन्दर्य्य और बल को क्षय करता है और उसे अन्धा और कठोर बनाता रहता है, उन के दासत्व से वह निकलने का अभिलाषी हो, और यह अनुभव करता हो, कि जिस सत्य देव की सत्य ज्योति के प्राप्त करने की योग्यता पाकर मनुष्य सत्य मोक्ष और सत्य धर्म विषयक ज्ञान और उन की प्राप्ति के योग्य हो सकता है, वह कितने महान और वह उसके लिए किस कदर श्रद्धा, सन्मान, आकर्षण और अनुराग की चीज़। वह कैसे सर्व्वोच सम्बन्धी, कि जिन से बढ़कर हितकर्ता उसका कोई सम्बन्धी नहीं। और उसकी जो वासना वा उतेजना वा नीचे के कोष की कोई और शक्ति अथवा इस संसार का कोई विषय वा सम्बन्धी उसे उन से परे अथवा उदासीन रखता है, वह किस क़दर तुच्छ और त्याग की वस्तु।।

जब तक किसी आत्मा के हृदय में इस प्रकार के अनुराग वा वैराग विषयक बोध पैदा न हों, तब तक जैसे वह आत्मा अन्धकार में रहता है, और ऐसा आत्मा चाहे मूर्ख हो वा विद्वान, धनी हो वा कंगाल, वह केवल अन्धलोक का वासी रहता है, वैसे हि वह जहां जहां और जब तक रहता है, वहां वहां और तब तक वह अपनी इस अन्धता और मलिनता के महा हानिकारक और विनाशकारी ज़हर को अपने और सम्बन्धियों तक पहुंचाता रहता है। कितनी भयानक अवस्था! मनुष्य होकर किसी के लिए अपने असल रूप से अबोधी रहना और फिर कई सूरतों में विद्वान कहलाकर भी अबोधी रहना किस कदर शोकप्रद!!

एक ओर जहां मेरे सन्मुख इस समय तुम में से बहुत से आत्माओं की वह अवस्था है, कि जिन्हें अब तक मेरी वह उच्च ज्योति प्राप्त नहीं हुई, कि जो आत्मा की गठन और उसके जीवन के बनने और बिगड़ने के सम्बन्ध में सच्चा बोध उत्पन्न करती है, वहां दूसरी ओर ऐसे कितने हि आत्मा भी मेरे सन्मुख आ रहे हैं, कि जिन्हों ने इस अन्धता वा अवोधता के कारण इस वर्ष में अपने अपने आत्माओं का कोई हित साधन नहीं किया, और कितने हि पहले की अपेक्षा पिछले वर्ष में कुछ और भी अधिक अन्ध और कठोर बन गए और कई भ्रष्ट और पतित होकर बिलकुल समाज से हि निकल गए हैं। ऐसे सब आत्माओं की यह अवस्था बहुत शोकप्रद और मेरे लिए बहुत दुखदाई है!!

फिर मैं जब कुछ और आत्माओं की ओर अपनी दृष्टि ले जाता हूं, तब उन में से मुझे कुछ ऐसे आत्मा भी दिखाई देते हैं, कि जिन्हों ने देव समाज में आने और मुझे अपना धर्म गुरू ग्रहण करने के महा वांछनीय अधिकार को निष्फल नहीं खोया, किन्तु अपनी अपनी योग्यता के अनुसार उन्हों ने कम या ज़्यादा रूप में अपने विविध साधनों के द्वारा मेरी धर्म्म विषयक उच्च ज्योति और शक्ति को अपने हृदय में अधिक से अधिक खैंचा और ग्रहण किया है। और पिछले वर्ष में उनका जीवन पहले की अपेक्षा निश्चय अधिक सुन्दर और उच्च और विकाररहित वा पवित्र बन गया है।

आत्मा के प्रकृत अस्तित्व के विषय में उनका बोध बढ़ा है और इस बोध की उन्नति के साथ साथ अधर्म्म से मोक्ष और धर्म के लाभ करने की आकांक्षा भी गहरी हुई है। यही थोड़े से वह आत्मा हैं, कि जिन के आन्तरिक रूप को देखकर मैं इस समय दुख के स्थान में सुख और शोक के स्थान में हर्ष को प्राप्त हो रहा हूं। यही वह आत्मा हैं, कि जिन के द्वारा जहां तक सम्भव हो, मेरे जीवन ब्रत के पूर्ण होने की आशा हो सकती है। यही वह आत्मा हैं, कि जो देव समाज की वर्तमान और भावी उन्नति में ख़मीर की न्याई हैं। और जो मेरी विशेष कृपा और मेरे विशेष आशीर्वाद के भाजन हैं। ऐसे आत्मा चाहे मेरे पारिवारिक सम्बन्धी हों और चाहे कोई और, निश्चय मेरे हैं। क्योंकि वह अपने अपने आत्माओं में कुछ न कुछ मेरे धर्म रूप को रखते हैं, और इसीलिए मेरे धर्म रूप के अंश और अंग हैं। मैं इस समय उन्हें अपने अंग रूप में देखकर उनके प्रति विशेष आदर और प्रसन्नता का प्रकाश करता हूं, और हिमालय पर्व्वत के एक शिखर से आशीर्वाद देता हूं, कि इस नए वर्ष में वह अपनी उच्च गति में और भी अधिक विकसित हों। मैं उन्हें और भी अधिक से अधिक उच्च अवस्था में देखूं और जैसे मैं पूर्णत: उनका हूं (और धर्म को लेकर मैं प्रत्येक आत्मा का हि पूर्णत: हूं) वैसे हि वह मेरे धर्म रूप को और अधिक पाकर मेरे और अधिक बन सकें। और तुम में से जो आत्मा अभी तक पूर्ण अन्धता और कठोरता की अवस्था में हैं, अथवा जो कभी कभी मेरी मंगल कामनाओं अथवा उच्च संगत आदि को प्राप्त होकर कुछ कुछ देर के लिए अपने अन्धकार-ग्रस्त आत्मा में मेरी जीवन पथ दर्शक ज्योति की कुछ किरणों लाभ करते हैं, और कुछ कुछ जाग्रत होते हैं, और फिर सो जाते हैं, उनके लिए ऐसी अनुकूल घटनाएं पैदा हों, कि जिन से उन्हें मेरी ज्योति अधिक से अधिक प्राप्त हो। और इस प्रकार तुम सब के जीवन का मार्ग जहां तक खुल सकता हो, वहां तक खुल सके। और जहां तक उस मार्ग के बोधी होकर और उस पर चलकर तुम अपने आत्मा का कल्याण साधन कर सकते हो, वहां तक उसका कल्याण साधन करने के योग्य हो सको। इस नए वर्ष में मेरा यह हृदय-गत शुभ आशीर्वाद तुम सब को प्राप्त हो।

नया साल मुबारक हो

सब सेवकों और धर्म जीवन के पाठकों को नए साल की बहुत शुभकामनाएँ। नया साल उनके लिए हर प्रकार से सेहत उन्नती और खुशीयाँ लाए और उच्च जीवन लाने वाला हो।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 163 वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 163वां शुभ जन्म महोत्सव बड़ी धूमधाम से देव आश्रम में मनाया गया। देव आश्रम का स्थान जो 5-6 महीने पहले ही खरीदा गया था, उसको संवारने के लिए बहुत कठिन परिश्रम किया गया। श्रीमान सुखदेव जी ने लंडन बैठे हुए अपने निकटी रिश्तेदारों को यहां भेजा, जिन्होंने रात दिन संग्राम किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी बार बार जाकर सलाह मशवरा देते रहे और कई ज़रूरी प्रबन्ध करते रहे। सुखदेव जी ने वहां बैठे हुए कई प्रकार के प्रबन्ध करवाए और उनकी गहरी आकांक्षा थी कि किसी प्रकार भी गुरू का जन्म महोत्सव इसी स्थान पर मनाया जाए।

इस उद्देश्य के लिए सारे स्थान को साफ सुथरा और पेंट आदि करवाया गया, इसमें सहायता के लिए जगदीश जी तो सहायक होते ही रहे, इसके अलावा 6 दिसम्बर से ही चौधरी साहिब अपने एक साथी के साथ यहां सहायक होने के लिए आ गए और उन्होंने रात दिन एक कर दिया। उसके बार राजेन्द्र जी देहरादून ने आकर बिजली का वह शानदार काम किया कि यकीन नहीं होता था कि यह वही स्थान है। बिजली का अलग कनैक्शन लगाने, पानी का प्रबन्ध आदि करने, बिस्तरों का प्रबन्ध करने, बर्तनों का प्रबन्ध करने, टैंट आदि का प्रबन्ध करने में श्रीमान जगदीश जी ने बहुत संग्राम किया, जिसमें श्रीमान जी भी सहायता करते रहे। इस नये स्थान पर बहुत से नये टायलैट वा बाथरूम बनाए गए। हाल में सजावट के लिए व्यस्त होने के बावजूद सतिन्द्र ढिल्लों ने अपने कुछ अध्यापिकों के साथ बहुत चाव भाव से काम किया। शादी के लिए भी कोई इतना संग्राम नहीं करता, जितना परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म महोत्सव के लिए बहुत से धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर किया। फूलों से भरे गमले खरीदे गए। गेट से लेकर हाल तक कारपट बिछाया गया, तरह तरह की रंग बिरंगी लाईटस लगाई गईं, जैसे आम तौर पर क्रिसमिस में लगाई जाती हैं।

खाने का प्रबन्ध करने के लिए एक नौजवान जो समाज से सम्बन्धित भी नहीं था, परन्तु श्रीमान बलदेव सिंह जी को सैर पर मिलता था और उनकी बातचीत से प्रभावित था, उसने खाने का प्रबन्ध अपने सिर पर ले लिया और स्वयं किचन में खड़े होकर साथ काम करता रहा। कई दिक्कतों के बावजूर उन्होंने इस काम को अंजाम दिया।

प्रवेश सभा से पहले बहुत से स्थानों से लोग पंहुच गए थे। पंजाब से गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, भटिंडा, मानसा, तलवंडी साबो, कल्याण, थराजवाला, मोहाली, गिधडवाही, समराला, लुधियाना, संगरूर, घुमियारा। राजस्थान से पदमपुर, जयपुर, श्री गंगानगर, गज सिंह पुरा, कोटा, मण्डी बण्गा (कसबा)। यू०पी० से श्री अकबरपुर, सहारनपुर, दौलतपुर, कानपुर, लखनऊ, मेरठ, पर्वत आश्रम सोलन, हरियाणा से अम्बाला, पंचकूला, कैथल मल्लेका, केसूपुरा, मौजदीन, बनी। बिहार धनबाद से, चण्डीगढ़, दड़बा, अमरीका आदि से दो सौ यात्री पधारे।

सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाईं। 17 तारीख़ की सुबह सभा के बाद श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने अपना परिवर्तन सुनाया जो पूजनीय भगवान की महिमा को दर्शाने वाला था। शाम के लैक्चर डा० शशी जैन और डाक्टर विनोद चन्द्र जी खेड़ा द्वारा दिए गए, जो बहुत प्रभावशाली थे। बच्चों की सभा के बाद संगीत सभा रखी गई, जिसमें खेड़ा इंस्टीचूट के बच्चों ने बहुत अच्छे भजनों का गान, सरबजीत जो बहुत अच्छी संगीतकार हैं उन्होंने दो भजनों का गान किया, बहुत ही सुन्दर महौल बना।

इस प्रकार बहुत ही सुन्दर वातावरण बनता रहा। चार बहुत ही योग्य जन नये सेवक बने, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान बलदेव सिंह जी और जीत सिंह जी ने बहुत ही सुन्दर और सराहनीय शब्दों में उनका परिचय करवाया और सेवक बनने के बाद, सब सम्बन्धियों ने उन्हें फूलों के हारों से लाद दिया। इस महोत्सव पर तकरीबन 2 लाख नकद दान प्राप्त हुआ, जिसमें, लाख श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार ने और 20 हजार लंगर के लिए दिया और डाक्टर देव अनुरूप ने 6 लाख रू० देने का वायदा किया। दो, तीन जनों ने शराब छोड़ने का और एक जन ने सिगरेट छोड़ने का वायदा किया। कुछ जनों ने सत्संग रखने और सत्संगों में आने का वायदा किया। तकरीबन 4 हजार रुपयों की पुस्तकें बिकी।

<u>16.12.2013 , प्रवेश सभा – शाम 4.30 बजे</u>

<u>सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी</u>

ठीक समय पर श्रीमान जगदीश जी के "हमारे पूजनीय सत्गुरू जी, तुम हो धन्य" वाले भजन का सुर अलापने के साथ ही मुबारिक महोत्सव का शुभ आरम्भ हो गया। भजन के आरम्भ होते ही विशाल सुन्दर हाल में यात्री पधारने लगे। भजन के बाद सब उपस्थित जन खड़े हो गए। सुन्दर हार के द्वारा परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि का अर्चन किया गया। पावन देव स्तोत्र का समूह गान किया गया। सभापति जी ने विनीत भाव के साथ हृदय मुग्ध हो कर व्याख्या की। उसके पश्चात् सबके बैठ जाने पर गुरू महाराज का ध्यान धर के भक्ति भाव से भर कर देव प्रभावों की प्राप्ति और महोत्सव की सच्ची सफलता के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद श्रीमान जगदीश जी ने ही दूसरा भजन "तुम्हारे दर से हे सत्गुरू धर्म का दान मिल जावे" गाया। धीरे धीरे अनुकूल वातावरण बनना शुरू हो गया। सभापति जी ने अपना बयान शुरू किया और फरमाया कि विश्व में बहुत से धर्म हैं। अभी अभी गाए गए भजन में धर्म का दान मांगा गया है, वह दुनिया के धर्मों की तरह दूध, पूत, पैसे, पद, प्रभुत्व, सुख शान्ति का दान नहीं, मुकदमे, लड़ाई आदि में जीत का दान नहीं, रोगों से मुक्ति का दान नहीं, वह तो कुछ विशेष वस्तु की प्राप्ति के लिए दान की प्रार्थना है। उस में विशेष रोशनी और शक्ति या देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। साधारणत: लोग मंदिर, गुरूद्वारे जाकर, माथा टेक कर, दो पैसे भेंट करके, प्रसाद लेकर समझते हैं कि धर्म मिल गया है। जब यहां आकर हम धर्म मांगते हैं, इसका बहुत से जनों को पता नहीं चलता कि हम धर्म का क्या दान मांग रहे हैं। हम धर्म के नाम पर रूहानी रोशनी और रूहानी शक्ति संपन्न प्रभावों का – देव प्रभावों का, रूहानी अद्भुत असरों का दान मांगते हैं। निराली रोशनी, शक्ति का दान मांगते हैं।

उच्च भावों का नाम ही धर्म है। उच्च भाव दो प्रकार के हैं। एक तो सात्विक भाव, जो परत्व बोध और परसेवा में लगाते हैं। वह हैं, श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी व अभाव निवारण के भाव। इन भावों के द्वारा सेवा होती है लेकिन ये भाव ग़लत भी ले जाते हैं जैसे कबीर जी ने चोर की रक्षा की थी। दूसरे सर्वोच्च भाव जो गुरू महाराज जी के साथ जोड़ते हैं। उन्हीं भावों से गुरू महाराज जी के साथ सम्बन्ध बनता है, उनके द्वारा ही अपनी योग्यता के अनुसार देव प्रभाव प्राप्त हो सकते हैं।

कहलाने वाले धर्म रख कर बड़े बड़े साधु हो सकते हैं, मुखिया सम्प्रदायों के हैड हो सकते हैं, उनके लाखों श्रद्धालु हो सकते हैं, तो भी उनसे गलतियां हो सकती हैं, कुकर्म हो सकते हैं, जेलों में चले जाते हैं, घोर दुख, अनादर, अपमान भोगते हैं और भोग रहे हैं। सच यह है कि धर्म उनके पास नहीं।

इस स्थान पर जो दान मिलता है, वह हमारे हानि व हित से जुड़ा हुआ है। इस अनोखे दान के लिए आप यहां पधारे हैं। ऐसे दान का न किसी को ज्ञान है न ही मूल्य है। क्योंकि आप इस अनोखे दान के लिए यहां पधारे हो, इसलिए मेरा आपके प्रति दिल झुक रहा है। यहां मेरे एक रिश्तेदार बैठे हैं। उन्होंने मेरे पास अपने एक पुत्र की बहुत ही तारीफ की। उन्हें हमने यहां आने की दावत दी। वह यहां आए और उन्हें यहां आकर, सभाओं में 3 - 4 दिन बैठ कर बहुत लाभ हुआ। उन्होंने बताया कि मैं शराब पीता हूँ। नौकरों से भी अधिक काम करवाने के लिए उन्हें शराब पिलाता हूँ। बच्चों को अंडे खिला देता हूँ। यहां आकर मैंने शराब बिल्कुल दोड़ दी है। यहां आकर मुझे इसमें बहुत हानि महसूस हुई है। इस प्रोग्राम में शामिल होकर मुझे बहुत तृति मिली है, वह घर गए। उनके पिता जी उनके बदले हुए रंग ढंग को देखकर दंग रह गए और मुझ से बोले कि श्रीमान जी! कमाल हो गया। हरिन्दर ने नशा छोड़ दिया। वह यह करता है आदि।

फिर सभापति जी ने नीच जीवन में परिवर्तन की कई और ठोस दिलों को हिलाने वाली प्रभावशाली घटनाएं पेश की।

इस महान दर पर महा हितकर, परम हितकर दर पर अजब अमृत बांटा जाता है, निराली रोशनी और गुरू जी का तेज बांटा जाता है। वह निराली रोशनी और तेज भरा अमृत हमें हमारे नीच जीवन की भयानकता दिखाता है जो दुनिया में और कोई नहीं दिखाता है और हमें उस गंदगी की दलदल से निकाल कर भला और नेक बना देता है।

आपका ऐसे निराले और अति शुभ अवसर पर पधारना बेहद मुबारिक है। आप सबका तह दिल से (खड़े होकर) स्वागत करता हूँ। मुबारिकबाद कहता हूँ, Welcome आपको कहता हूँ, प्रणाम करता हूँ, सन्मान देता हूँ। आप यहां सदा पधारते रहो और अच्छे भाव बनते रहें।

इस स्थान पर जीवन बदलने के क्रिश्मे होते हैं। सरलता और सच्ची दीनता से देव प्रभाव मिल जाते हैं और हमारा वह भला करते हैं जो और कहीं बिलकुल नहीं हो सकता है।

हमें अपने हाल का तब पता लगता है या लग सकता है, जब हमें अपने भावों का सही पता लग जावे। हमारे भाव ही हमें चलाते हैं और कई प्रकार से नचाते हैं। इस विशेष दर पर अच्छे भावों

के बारे में पता लगता है। नीच भावों से होने वाली हानि की होश आने लगती है।

सभापति जी ने सोलन में देर रात गए अपनी वासना से निकलने के लिए हृदय की तह से बेकरारी से भर कर रो रो कर प्रार्थना करने का और जीवन में अजब बदलाव आने का निजी अनुभव उपस्थित जनों के साथ बांटा। सत्संग में आते रहने से उच्च बरकतों की प्राप्ति के विषय में इशारा किया। पवित्र हार्दिक खुशी का इज़हार किया और कहा कि मुझे जो दान मिला है, मैं सदा उसका आभारी हूँ। मैं कभी भी इस ऋण को उतार नहीं सकता।

ऋषि नौध सिंह जी का वर्णन करते हुए बताया कि जो अपनी बहिन के पास रहते थे लेकिन उनकी बहिन अपनी बेटियों को 20 - 30 मील तक भी कहीं साथ ले जाकर छोड़ने के लिए नहीं भेजती थी, गुरू महाराज के प्रभावों ने उन्हें समाज की कर्मचारी लड़कियों का पिता, संरक्षक बना दिया। गुरू महाराज बिगड़े वजूदों को कुछ का कुछ बना देते हैं। हमारे कुकर्म और अपराध छुड़ा कर हमें जेल जाने से बचा लेते हैं।

सभापति जी ने डा० मुनशा सिंह जी का शानदार परिवर्तन पेश किया कि किस प्रकार देव प्रभावों ने उन्हें वह रोशनी वह ज्ञान और वह शुभ परिवर्तन दिया जो उन्हें 12 - 14 धर्म जिनमें वह पहले जाते रहे थे, नहीं दे सके थे।

यह साधारण सत्संग नहीं है। यह साधारण अवसर नहीं है। यहां आकर हमारा सत्य ज्ञान बढ़ता है, हमें नीचता से निकलने के लिए ज़ोरदार प्रेरणाएं और धक्के लगते हैं। हमारे देश का बुरा हाल है जहां नशों से बरबादी की भरमार है। बलात्कारों की बाढ़ आ रही है। बेईमानी, भ्रष्टाचार की सुनामी आई हुई है। घर घर संबंधों में नरक है। हमारे देश को इस दर की ज़रूरत है, बेहद ज़रूरत है।

यह दर परम आवश्यक है। देव प्रभावों के बिना किसी का गुज़ारा नहीं। यह हम सबके लिए अति ज़रूरी है। इससे कभी भी उदासीन या गाफिल नहीं रहना चाहिए। वरना घाटा ही घाटा है।

फिर सभापति जी ने इस दर से लाभ उठाने के नियम बताए।

1) एकाकारी पहन कर शामिल होना है।

2) समय पर आना है और श्रेणी के अनुसार बैठना है।

3) प्रार्थनाशील होकर बैठना है।

4) निन्दा चुगली से बचना है। बुराई से हृदय मैला और अंधा हो जाता है।

5) श्रद्धावान और अधिकारी अवस्था में बैठना है।

6) अपनी कमियों पर चिन्तन करके बैठना है।

7) सेवा करते रहो।

यह नियम पूरे होंगे, तो प्रभाव मिलेंगे।

सभापति जी के बयान के बाद श्री मंत्री जी ने यात्रियों का स्वागत किया। कुछ सूचनाओं और कुछ ड्यूटियों का वर्णन किया। अगले दिन का प्रोग्राम बताया।

चार बार जय ध्वनि करके यह प्रभावशाली सभा समाप्त की गई।

<u>पहली सभा दिनांक 17 दिसम्बर 2013 , मंगलवार – प्रातः 10 बजे</u>

सभापति - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

भजन - जीवन ज्योति के तुम सूरज, अंधेरा दूर करते हो।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की परम

पावन छवि पर माला अर्पित कर देवस्तोत्र का गान एवं श्रद्धापूर्वक सभापति जी ने व्याख्या की। भगवान के देव दरबार में प्रार्थना की।

जो परमात्मा को मानने वाले हैं वे परमात्मा को अपना मूल सम्बन्धी मानते हैं, बाकी सब गौण सम्बन्धी हैं। देव धर्म कहता है कि समस्त जीवित व अजीवित अस्तित्वों के समूह का नाम नेचर है। नेचर के समस्त जगतों के साथ हमारा गहरा सम्बन्ध है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा हमारे परम आवश्यक जीवन सम्बन्धी हैं। आक्सीजन, हवा भी हमारा परम आवश्यक और जीवन दायक सम्बन्धी है। बनस्पति जगत भी हमारा परम आवश्यक सम्बन्धी है। भौतिक जगत भी हमारा परम आवश्यक सम्बन्धी है। अगर हमारा जीवन है तो इन्हीं सम्बन्धों के कारण है। जिन्होंने सम्बन्धों को तोड़ने या छोड़ने की शिक्षा दी है, वह गलत है। जो हमारे बुर्जुगों ने बातें बताई हैं वे सारी की सारी सही नहीं है। जो वजूद सत्य है वह मिथ्या या कुछ और कैसे हो सकता है चाहे उसे कोई नबी या पीर या गुरू मिथ्या कहें, वह मिथ्या नहीं हो सकती।

नेचर तत्व की समझ अगर हमें आ सकती है तो पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा में आ सकती है। वह हमें नई किस्म की जाग्रति व होश देते हैं। जैसा कि भजन में आया है कि सब सम्बन्धों से बढ़ जावे मेरे भगवन का सम्बन्ध। भगवान देवात्मा के देव जीवन व देव शक्तियों से उच्च आत्मा पैदा हुए हैं। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव हमें होश देते है। देवात्मा के देव प्रभावों ने मुझे माँ का रूप दिखाया, उनके उपकार नज़र आए हैं। प्रवीण महाजन को अगर भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मिलते तो भाई भाई की हत्या न करता। स्वार्थ त्याग की भावना यहीं से मिलती है। देवसमाज में बताया जाता है कि श्रद्धाभाजन मात-पिता जी श्रद्धा भाव करूं उपहार। जो व्यक्ति विशुद्ध परोपकारी होते हैं वह श्रद्धाभाजन होते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सम्बन्ध हमारे लिए परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध है। जो सर्वहित सम्पादक है, जो सब अंगों में हित सम्पादक है। जो हमारी मूल हस्ती आत्मा का ज्ञान व बोध देते हैं उसकी रक्षा और विकास करते हैं। इसलिए भगवान देवात्मा हमारे सब परम आवश्यक सम्बन्धों से अतिश्रेष्ठ और अति महान पवित्र एवं परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्धी हैं।

सभापति जी के ब्यान के बाद देवसमाज के भूतपूर्व कौन्सलर श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने अपना उच्च परिवर्तन सुनाया कि उन्होंने बचपन व जवानी में गलत संगत के कारण तीतर व कबूतर मारने व खाने शुरू कर दिये थे मास के साथ साथ शराब पीनी भी शुरू कर दी जबकि हमारे घर में कभी मासाहार या शराब नहीं थी। मेरी पत्नी खाना बनाती परन्तु में ढाबे में जाकर मास खाता। घर से रोटियां ले जाता और बाहर होटल में जाकर मास के साथ खाता। मैं कच्चा मास लाता और अपनी पत्नी से जबरन मास पक्वाना शुरू कराया। दूसरी तरफ आर्य समाज का मेम्बर भी था। मैं अपने को ईश्वर का भक्त मानता था और अपना विवाह अनुष्ठान मैंने आर्य समाज विधि से खुद किया।

मुझे एक सज्जन के द्वारा देव समाज में आने का अवसर मिला। देवसमाज में आकर मुझे लगा कि ये अपने गुरू को भगवान क्यों कहते हैं।

मुझे श्रीमान मास्टर इन्द्र सिंह जी एवं श्रीमान गुरूसेवक सिंह जी द्वारा भगवान देवात्मा के दरबार में आने की बड़ी प्रेरणाएं मिलीं। मेरे दफतर के साथी श्रीमान राधेशाम जी जो ब्राह्मण हैं जो कभी शराब नहीं पीते थे मैंने उन्हें भी शराबी बना दिया। मेरी पत्नी करवा चौथ के दिन मेरे लिए शुभ कामना करती परन्तु मैं उस दिन भी शराब पीकर चोट खाकर घर आया। धीरे धीरे देवसमाज की सभाएं सुनकर मुझे होश आने लगी। मैंने कितनी ही धर्मों की पुस्तकें पढ़ी परन्तु जो प्रतिज्ञाएं देवसमाज में कराई जाती हैं वह किसी धर्म मत में नहीं कराई जाती। देवसमाज में आकर मेरी जिज्ञासाएं शान्त होने लगीं। मैं रिश्वत लेता था देव समाज में आकर शराब मांस और रिश्वत लेनी छोड़ दी। जो रोशनी मुझे देवधर्म में आकर मिली वह मुझे न आर्य समाज में मिली न वेदों आदि से ही मिली। मैं देवसमाज में 1983 ई० में सेवक बना था। देवसमाज का कौन्सलर भी रहा परन्तु मुझे यहाँ आकर नज़र आया कि अभी तो मुझे देवात्मा की शिक्षा का **ABCD** का भी पता नहीं है। देवसमाज में आने से पहले मैं अपने पिता से लड़ता था। आपने अपने माता पिता के प्रति कृतज्ञ भावों का प्रकाश किया उनके उपकारों का ब्यान किया। अपनी गलतियों का ब्यान किया। देवात्मा के निराले देवप्रभाव हैं कि मैंने रिश्वत लेनी छोड़ दी तो जब मैं रिटायर हुआ तो मेरी कुर्सी पर जो बैठा वह भी कई वर्षों तक प्रेरणा लेता रहा कि इस कुर्सी पर चौहान साहब ने रिश्वत नहीं ली तो मैं भी इस कुर्सी पर बैठकर रिश्वत नहीं लूंगा। यह है देवप्रभावों के असर। अगर मैं देवप्रभाव न पाता, तो पता नहीं मैं क्या होता कहाँ होता। अन्त में श्रीमान पं० हरनारायण जी अग्निहोत्री जी के उर्दू से हिन्दी में प्रकाशित जीवन चरित का विमोचन हुआ। श्रीमान कुलदीप सिंह जी दहिया ने अपने उद्गार प्रगट किए।

<u>17 – 12 – 2013 , सायं 4 बजे। पब्लिक लैक्चर:</u>

वक्ता - प्रिसीपल डाक्टर मिसिज शशी जैन

भजन - बिना तुमरे मेरे सतगुरू कहाँ मेरा ठिकाना है। नहीं कोई ठिकाना है।

सभापति - श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने वक्ता श्रीमती शशी जैन जी का परिचय कराया कि यह अपने श्रद्धेय बाबा श्रीमान निरंजनदास जी की पौत्री एवं श्रीमान प्रेमचन्द्र जी की सुपुत्री हैं। इनकी माता जी भगवान देवात्मा का सेविका थीं। यह देवसमाज कालेज फार विमेन सेक्टर 45 बी चण्डीगढ़ की रिटायर्ड प्रिंसीपल हैं। आपको चार राष्ट्रीय एवार्ड मिल चुके हैं। परिचय के बाद भजन का गान हुआ।

मेरे जीवन के दाता तुमरी महान महिमा।

मैं देवसमाज से जन्म से ही जुड़ी हूँ।

विषय: - आधुनिक युग के सन्दर्भ में देव धर्म का महत्व।

आधुनिक युग के दो पहलू हैं। संसार के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में बहुत विकास हुआ है। पुराने समय में नाना प्रकार की बिमारियां थीं जिन पर आज विज्ञान ने विजय प्राप्त कर ली है। अन्तरिक्ष की खोज में बड़ा विकास हुआ है। विज्ञान के द्वारा हर क्षेत्र में भौतिक तरक्की हुई है।

लेकिन इतने विकास के बाद भी मानवता में हाहाकार है। अखबारों में जो समाचार प्रकाशित

होते हैं उन्हें पढ़कर पता चलता है कि संसार में कितना पाप है। बाबा आसाराम जी व उनके पुत्र व सेवक कितना घिनौना काम करते रहे हैं। सरकार की जितनी भी योजनाए हैं उनमें सबमें भ्रष्टाचार है। आज जल प्रदूषण है, हवा प्रदूषण है, ध्वनि प्रदूषण है। मासांहार के लिए पशुओं का शिकार किया जाता है। पशुओं की बलि दी जाती है। धर्ममतों वाले आपस में लड़ते हैं। करोड़ों रूपए सरकार के आतंकवाद से रक्षा करने के लिए खर्च होते हैं।

ऐसे में देव धर्म का क्या महत्व है? देव धर्म में इस समस्या का कारण मनुष्य के नीच सुख अनुराग हैं। देव समाज में प्रवेश करने वाले जन को सबसे पहले आठ दुराचारों से दूर रहने के लिए प्रतिज्ञाएं कराई जाती हैं। भगवान देवात्मा ने धर्म का वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण किया है और वैज्ञानिक विधि द्वारा खोजी गई विधियां सार्थक हैं।

भगवान देवात्मा ने प्रकृति के अटल नियमों पर आधारित धर्म की खोज की है। भगवान देवात्मा ने आत्मा का ज्ञान वैज्ञानिक विधि के द्वारा दिया है। आत्मा परिवर्तन के अटल नियमों के कारण परिवर्तनशील है। भगवान देवात्मा ने नीच सुख अनुरागों की वैज्ञानिक पद्धति प्रदान की है।

नीच सुख अनुराग और नीच घृणा से मोक्ष प्राप्त करना ही मनुष्य का सत्य लक्ष्य बताया है। कोई भी अस्तित्व पहले से बेहतर बनता है, यह विकास है और जो पहले से बदतर बनता है, वह विनाश है। भगवान देवात्मा की शिक्षा है कि मनुष्य को चारों जगतों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। देवधर्म में सम्बन्ध तत्व की शिक्षा के अनुसार सोलह प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं। भगवान देवात्मा ने सम्बन्धों में कर्त्तव्य एवं वर्जित कर्मों की शिक्षा दी है। देवधर्म प्रेक्टीकल परिवर्तन पैदा करता है।

भगवान देवात्मा के देव जीवन की एक एक घटना अलौकिक है। देव धर्म एक निराला धर्म है।

<u>18 दिसम्बर 2013, परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 163 वां शुभ जन्म दिन।</u>

प्रातः 6.30 बजे धर्म सम्बन्धी स्नानादि करके एवं बसन्ती एकाकरियों से सुसज्जित हो देवाश्रम के प्लेटफार्म पर एकत्र हो भगवान देवात्मा की महिमा के भजनों का गान करने लगे। घना कुहरा (धुन्ध) और सर्दी के बावजूद भी धर्म सम्बन्धियों के चाव-भाव से श्रद्धापूर्वक भजनों के गान से वातावरण श्रद्धामय बनता गया। श्री अकबरपुर से पधारे श्रीमान किशन सिंह चौहान व श्रीमान सुभाष शर्मा ने, महोत्सव गीत गाया।

देवगुरू का जन्म दिन मनाना,
श्रद्धा भावों से मस्तक झुकाना
नमन करना और दिल को झुकाना,
गुरूगाथा को सुनना सुनाना,
नीच भावों को मनमें न लाना,
उच्च भावों से हृदय सजाना।

जैसे ही घडियाल ने सूर्योदय की सूचना दी तो भगवान देवात्मा की जय ध्वनि आकाश में गूंज उठी।

बैंड बाजा बजने लगा। भगवान देवात्मा के सेवक सेविकाएं कतारबद्ध हो दोनो हाथों में फूल मालाएं लेकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा की पावन छवि के सम्मुख अर्पित करके प्रणाम करने का दृश्य उच्च लोक का नज़ारा पेश कर रहा था।

प्रात: 9 बजे की विशेष सभा के सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परम पूजनीय भगवान की छवि पर माला अर्चन के बाद देवस्तोत्र का गान एवं व्याख्या के बाद दीन भावी हो भगवान के देवदरबार में करबद्ध होकर उनकी देवज्योति के प्राप्त करने की भिक्षा याचना की।

"अद्वितीय जीवन व्रत धारी अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" भजन का गान श्रीमान जगदीश जी ने बड़े श्रद्धा भाव से किया।

विशेष सभा का विषय था भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता, धन और जन की अपील।।

विकास का नियम नेचर में चुपचाप अपना काम करता है। पानी प्राकृतिक नियम से नीचे की ओर बहता है। ऊपर पहुँचाना है तो मोटर पम्प लगाकर ऊपर चढ़ता है। चारों जगतों में विकास का नियम काम कर रहा है। विकास क्रम में ही नेबुला से हमारा सूर्य बना। अब भी विकास क्रम में सूर्य बन रहे हैं। हमारी पृथ्वी आग का गोला थी। धीरे धीरे ठंड़ी हुई। तीन चौथाई भाग में पानी इकट्ठा हुआ। फिर जल से जीवनी शक्ति का प्रकाश हुआ। उद्भिद और पशु जगत की उत्पति हुई फिर पशुओं में थोड़ी थोड़ी अकल आई। लाखों साल पहले स्तनपायी जीवधारियों बन्दर जाति की नसल से मनुष्य का विकास हुआ फिर धीरे धीरे मनुष्य का विकास होता गया। देखते-देखते भौतिक जगत के वजूदों का विकास हुआ। अकल के विचार से दुनिया में बड़ा विकास हो रहा है। पशुओं के अन्दर भी सुख दुख के बोध आए हैं। इन्सानों के अन्दर जो अकल का चिराग है वह पशुओं में नहीं है। अकल के साथ-साथ मनुष्य सुखों का अभिलाशी बनकर उनका गुलाम बनता गया। मनुष्य नशों का, स्वाद का, सेक्स का तथा आलस का सुख अनुरागी है। यह सुख अनुरागी की दुनिया है। पशुओं को कीमती पत्थरों का ज्ञान नहीं है। मनुष्यों को नाना प्रकार की शक्तियों का ज्ञान प्राप्त होता गया। सात्विक जीवन धारी पैदा हुए। उनके अन्दर दया का भाव आया। बड़े बड़े परोपकारी पैदा हुए। सात्विक जीवन धारियों से ऊपर देवजीवन धारी देवात्मा में हित अनुराग पैदा हुआ। अपना व दूसरों का हित अनुराग पैदा हुआ। भगवान देवात्मा अपने हित अनुराग के कारण किसी अहितकर गति को देखकर व्याकुल हो जाते थे। देख नहीं सकते थे। बुराई से पाप से विकर्षण पैदा हुए। भलाई के लिए आकर्षण और बुराई के लिए दुख और तड़पन पैदा होती थी। भगवान देवात्मा के अन्दर हित अनुराग के बाद सचाई का अनुराग पैदा हुआ। सुख अनुरागी मनुष्यात्माओं से देवात्मा असंख्यों गुणा शुभ अनुरागी देवात्मा हैं। 32 वर्ष की उम्र में भगवान के अन्दर हित व सत्य का अनुराग पूर्णता को पाकर पूर्ण धर्मावतार बने। भगवान देवात्मा के अन्दर भौतिक ज्योति, मानसिक ज्योति, सात्विक ज्योति से ऊपर देव ज्योति का प्रकाश व विकास हुआ है। मनुष्य सुख अनुरागों के पीछे भाग रहा है। साईंस का जनक सर फ्रांसिस बेकन था जो महारानी विक्टोरिया के जमाने में वित्त मंत्री था। विद्वान लेकिन सुखों के कारण रिश्वत के आरोप में हटा दिया गया था। भगवान देवात्मा ने जब अपना जीवन व्रत ग्रहण किया तो उनके सामने यह लक्ष्य था कि सुख

अनुरागी मनुष्यों को पवित्र बनाना है। ईमानदार बनाना है। नीच रागों और घृणाओं से हटाकर नवजीवन पैदा करना है। 20 दिसम्बर सन् 1882 ई० में भगवान देवात्मा ने ब्रह्म मन्दिर में

सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे
जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।

अद्वितीय व्रत ग्रहण किया।

भगवान देवात्मा ने सुखअनुरागी मनुष्यों को सुखों के अन्धकार की गर्त से निकाला है। परन्तु परिहत अनुरागी देवात्मा को अन्धी इन्सानियत ने बेइन्तहा उत्पीड़ित किया जिसकी कथा अवर्णनीय है। नीच सुखों के पागलों की दुनियां में भगवान को काम करना पड़ा। दो आर्य समाजी सम्पादकों ने अपने अखबारों में भगवान के खिलाफ झूठे आरोप प्रकाशित किए। जब भगवान देवात्मा ने उनपर मानहानि का दावा करने की चेतावनी दी तो उनके छक्के छूट गए और उन्होंने लिखित माफी माँगी और सात अखबारों में अपनी झूठ बयानी को प्रकाशित कर के क्षमाा याचना की। अब्दुल गफूर बनाम धर्मपाल देवात्मा का विरोधी बन गया तथा उसने सत्तर हजार ट्रैक्ट भगवान के खिलाफ छाप कर बांटे। 24 साल के उपकृत परन्तु कृतघ्न पं० देवरतन ने भगवान को सताया तड़पाया। महाराज के एक कृतघ्न बेटे ने महाराज को कोर्ट में खड़ा किया। भगवान देवात्मा ने अपने उत्पीड़न की बड़ी दर्दनाक घटनाओं को वर्णन किया है कि भगवान पर विरोधियों ने कैसे कैसे भयानक झूठे इल्ज़ाम लगाए। वह अकथनीय है। भगवान देवात्मा के दुखों उत्पीड़नों को ब्यान करना मनुष्य के लिए असम्भव है।

सभापति जी ने खड़े होकर मिशन में जीवन भेंट करने या समय देने के लिए अपील की।

कल्याण सत्संग के लिए कई जनों ने हाथ खड़े किए। देवसुमन सिंह चौहान सहारनपुर ने खड़े होकर कल्याण सतसंग में सम्मलित होने के लिए कहा।

श्रीमान किशन सिंह चौहान (श्री अकबरपुर) ने संकल्प लिया कि वर्ष 2014 के महोत्सव तक वह 14 व्यक्तियों से धूम्रपान या शराब या मासाहार छुड़ाएंगे।

बाद दोपहर बच्चों की सभा का संचालन श्रीमती सुरजीत जी बराड़ ने किया। श्रीमान जगदीश जी की पत्नी श्रीमती सरोज जी ने पुरस्कार वितरण में सहायता की। बच्चों ने भजनों का गान करके श्रोताओं को भावविभोर किया। इनके बाद डा० विनोद खेड़ा जी की संस्था की छात्राओं ने गुरू महिमा के गीत गाए।

1) बड़े धन्य भाग्य उनके हैं जो गुरू चरणों में आते हैं।

2) अद्वितीय है रूप तुम्हारा जन समाज में हे भगवन।

3) मेरे सतगुरू से बढ़कर कोई अवतार क्या होगा?

4) मुझे भी शफा दो शफा देने वाले

श्रीमति सर्वजीत कौर जी ने

निराली शक्तियाँ लेकर मेरे भगवान आए हैं। बड़ी ही मधुर सुरीली एवं सुन्दर तर्ज में श्रद्धा भावों से भजन सुना कर सब श्रोताओं को गदगद कर दिया।

सुरक्षित हूँ मैं हे भगवन तुम्हारे हाथ में आकर

भजन को सुनकर श्रोतगण भगवान देवात्मा के श्री चरणों में झुक रहे थे। इतनी मधुर और सुरीली आवाज शायद 50 वर्षो में पहली बार सुनाई पड़ी।

उसके बाद डा० देव अनुरूप बराड़ जी ने अपनी माता जी और मासी जी के साथ भावपूर्ण होकर पूरे जोश से भजन गाया "प्रगटे देवगुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" उससे वातावरण और भी भावपूर्ण हो गया।

उसके बाद लैक्चर शुरू हुआ

18 – 12 – 2013 , पब्लिक लैक्चर

वक्ता: डा० विनोद खेड़ा, सभापति- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने विद्वान वक्ता श्रीमान डा० विनोद खेड़ा जी का बड़े सुन्दर शब्दों में परिचय कराया।

विषय : मौत के बाद जिंदगी संबंधी वैज्ञानिक सच्चाईयां।

इस लैक्चर के वक्ता डा० विनोद खेड़ा ने बताया कि किस प्रकार से मनुष्य वैज्ञानिक सच्चाईयों का विरोधी बनकर उनका घोर निरादर करता रहा है और सदियों बाद ही उन्हें स्वीकार करने के योग्य हुआ है। चाहे यह डार्विन द्वारा विकास के नियम की खोज हो, गैलिलियो द्वारा पृथ्वी के सूर्य के गिर्द घूमने की खोज हो या हमारे ही देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस द्वारा पौधों और धातुओं में जीवनी शक्ति की खोज क्यों न हो। वैज्ञानिकों का ऐसी खोजें करने पर अपमान तथा मज़ाक होता रहा है।

डा० खेड़ा ने बताया कि जब हम पहली बार विदेश जाते हैं तो हम वहां के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। इसी प्रकार मौत के बाद जिंदगी के विषय में हम जानकारी हासिल क्यों नहीं करना चाहते जहां जाकर हमें निरंतर रहना है। जितना अंधेरा परलोक के बारे में बाहर की दुनिया में हैं, उतना अंधेरा शायद किसी विषय में न हो। विज्ञान सच्चाई का खोजक है। इस विषय में हाल ही में किए गए दो अनुसंधानों का वर्णन करते हुए वक्ता ने बताया कि इस विषय पर लंदन के उत्तर में स्थित स्कोल नामक गांव में 1993 - 1998 तक पांच साल लगातार बहुत गहन अनुसंधान हुआ जिसमें चोटी के वैज्ञानिकों, जादूगरों और इस विषय में संदेह रखने वाले बुद्धिजीवियों को शामिल किया गया। परलोक के विषय में इस अनुसंधान का नाम है **The Scole Experiments.** सैकड़ों बैठकों के बाद यह साबित हुआ कि परलोक का अस्तित्व पूरी तरह सच है। इस प्रयोग का परलोक वासी उच्च आत्माओं ने ही मार्ग दर्शन किया।

रूस के वैज्ञानिक प्रो. कोरोत्कोव ने एक विशेष कैमरे का आविष्कार किया है जिसके द्वारा उन्होंने एक व्यक्ति की मरते समय की फोटो ली है जिसमें से उसका सूक्ष्म शरीर बनकर परलोक को गमन करता देखा गया है। इन प्रयोगों से संबंधित फोटोज़ भी श्रोतागणों में बांटी गईं।

वक्ता ने अमेरिका के **Bishop James A. Pike** द्वारा परलोक के विषय में अपने ईसाई धार्मिक विश्वासों के विपरीत अनुसंधान का विवरण प्रस्तुत किया। ब्राज़ील के **Arrigo** नामक अनपढ़ गरीब व्यक्ति के विषय में बताया जिसने बिना दर्द, बिना **antibiotics,** बिना खून बहाए सैंकड़ों आप्रेशन किए क्योंकि उस पर

जर्मन डा० फ्रिटज (**Fritz**) की आत्मा का अधिकार था जो 1918 में पहले विश्व युद्ध में मारे गए थे।

वक्ता ने अपने जीवन की निजी घटनाओं का भी विवरण दिया जिस में सन् 1960 में उनके नाना जी तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने एक छठी कक्षा के बच्चे पर आवेष करके अपने संदेश दिए थे।

1850 के दशक में यूरोप में, विशेषकर इंगलैंड में परलोक के विषय में बहुत सी घटनाएं घटीं। सन 1850 में ही पूजनीय भगवान देवात्मा का अत्यंत शुभ जन्म हुआ।

देव धर्म संस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने आज से लगभग 115 वर्ष पूर्व इस विषय में बहुत विस्तृत अनुसंधान किए थे जिनमें से एक-एक अनुंसाधन की साक्षी आज के वैज्ञानिक दे रहे हैं। देव धर्म संस्थापक के अनुसार मनुष्य का आत्मा अपने भीतर उसी प्रकार से सूक्ष्म सैल निर्माण करता है जैसे माता के गर्भ में इस स्थूल शरीर का। उसके नीच विचार व कर्म जो उसके या प्रकृति के अन्य भागों के लिए हानिकारक होते हैं, उसके इन सूक्ष्म सैलों को कमज़ोर बनाते हैं तथा बहुत अधिक नीच जीवन रखने पर नष्ट भी कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो व्यक्तिगत विचार से अपने अस्तित्व को पूर्णत: खो देते हैं या परलोक संबंधी अधम लोक में रहते हैं और वहां अंधकारमय, अपने जैसे घटिया लोगों के साथ रहकर दुखों भरा जीवन व्यतीत करते हैं। इसके विपरीत विशुद्ध परोपकार का जीवन उच्च भावों से व्यतीत किया गया जीवन, सूक्ष्म सैलों को मज़बूत बनाता है तथा मृत्यु के बाद ऐसे व्यक्ति परलोक संबंधी उच्च लोकों में अपने जैसे उच्च जीवनधारी व्यक्तियों में रहकर उच्च सुख व शांतिप्रद जीवन व्यतीत करते हैं और पृथ्वी लोक के तथा परलोक के नीचे के लोकों के लोगों की सेवा करते हैं।

परलोक के संदर्भ में डा० खेड़ा ने यह भी बताया कि परलोक के संबंध में सही जानकारी न होने के कारण अनगिणत इंसानों को मृत्यु के बाद परलोक गमन करने पर अत्यंत **confused** हालात में पाया गया है। उनमें से अनेकों को तो यह विश्वास ही नहीं होता कि वे अपने स्थूल देह का त्याग कर चुके हैं। इसलिए भी परलोक के विषय में सत्य ज्ञान पाना किसी भी मनुष्य के लिए नितांत आवश्यक है। परलोक के विषय में अत्यधिक अज्ञानता होने क कारण अनगिनत लोगों को मूर्ख बना कर उनको अत्यधिक हानि पहुंचाई गई है। वतमार्न काल में भी ऐसे **fraud** निरन्तर हो रहे हैं जिनसे बचने की अत्यधिक ज़रूरत है।

अंत में वक्ता ने बताया कि वह प्रतिदिन प्रात: काल परम पूजनीय, परलोक के उच्चतम लोक में विराजमान भगवान देवात्मा को स्मरण करके उनसे देवज्योति व तेज की प्रार्थना करते हैं तथा अपने उच्च परलोक वासी धर्म संबंधियों तथा संबधियों से सहाय प्रार्थना एवं आशीर्वाद प्रार्थना करते हैं जिस कारण उन्हें उनसे भरपूर सहायता मिलती है।

सभापति श्री बल बहादुर सिंह जी ने वक्ता डा० खेड़ा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण की सराहना करते हुए उनका हार्दिक धन्यवाद किया और उनके द्वारा मौत के बाद की जिंदगी संबंधी वैज्ञानिक

सच्चाईयों से अवगत होने पर उनसे लाभ उठाने की प्रेरणा की।

<u>सेवकी में ग्रहण करने की सभा।</u>
<u>19 – 12 – 2013</u>

प्रात: 8.30 बजे।

भजन- मेरे भगवन तुम्हारे बिन कहां मेरा ठिकाना है। सभापति: श्रीमान किशन सिंह जी चौहान।

नए सेवक सेविकाओं को सभासदी में ग्रहण करने के सम्बन्ध में

सबसे पहले पुष्प अर्चन कर देव स्तोत्र का गान किया गया तथा व्याख्या की गई।

सभापति जी ने गुरू महाराज से प्रार्थना की तथा भजन "बड़े धन्यभाग्य उनके हैं जो गुरू चरणों में आते हैं" के गान के बाद फरमाया कि मनुष्य जन्म लेने के बाद उसको सफल भी करना है जो मनुष्य गुरू के चरणों में आकर अपना जीवन सफल कर सकते हैं। केवल जन्म लेना ही काफी नहीं है बल्कि गुरू के चरणों में आकर अपना जीवन सफल करना है।

चार जनों ने भगवान देवात्मा की सेवकी में दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

1) श्रीमान कैलाश चन्द्र जी अग्रवाल लखनऊ (उ०प्र०)
2) श्रीमान हेमराज जी धमीजा पदमपुर (राज०)
3) श्रीमती बसन्ती देवी जी मेरठ (उ०प्र०)
4) श्रीमती मनदीप कौर जी केसुपुरा (सिरसा)

इन सबका सुन्दर परिचय कराया गया। और निम्न भजन का गान किया गया।

करें हम बेनती सारे जीवन का दान मिल जावे।

सेवक बनने का इन सबको महा अधिकार मिल जावे।

धर्म सम्बन्धियों ने सबका फूलों के हार से स्वागत व सम्मान किया और इस खुशी में दान भी दिया।

<u>भाव प्रकाश</u>

<u>श्री रमेश कुमार जी, बंगी फाज़िलका –</u> प्यारे धर्म सम्बन्धियों! यहां जो कुछ हुआ है, वह सब गुरू महाराज जी की विशेष कृपा और सहायता से हो रहा है। जिन लोगों ने यहां सेवा की, मैं उन सबका बहुत धन्यवादी हूँ। अपनी ग़रीबी और तंगी के पहले हालात का दीनतापूर्वक बयान किया। और लंगर के लिए बर्तनों की, शीशे आदि ज़रूरी जगहों पर लगवाने की उन्होंने सेवा की है। वह भविष्य में भी खुशी खुशी करने की इच्छा रखते हैं। लंगर में सर्विस की कमी रही है, उसका पूरा पूरा ख्याल रखा जाएगा। और सब ज़रूरतों का ख्याल रखा जाएगा। दिली चाव भाव से सेवा करूंगा। (उन्होंने बहुत ही मेहनत और संग्राम से इस स्थान को महोत्सव के लिए उपयोगी बनाने की कोशिश की)।

<u>श्रीमान जगजीत सिंह जी, लुधियाना –</u> आने से पहले श्रीमान जी ने **Invitation Cards** भेजे थे, जो मैंने सबको पहुँचा दिए। लेकिन सिर्फ मैं ही परिवार सहित यहां आ सका हूँ। यहां आकर अपनी कमियां नज़र आई हैं और महसूस हुई है। अपनी कई बातों में लापरवाही महसूस हुई हैं। जितना समय पहले से निकालना चाहिए था, वो नहीं निकाल पाया। मेरी प्रार्थना है, लुधियाना (में बनाए) साधन स्थान पर जनवरी

महीने में खास सभा व सत्संग रखा जावे। गुरू महाराज की फिलासफी की सुंदरता और महानता नज़र आई है और महसूस होती रही है। अपने अंदर एक एक नीच अनुराग का भयानक रूप नज़र आया है और गहराई से महसूस हुआ है। गुरू महाराज के दर्शन और प्रभावों के संबंध से सारे निजी, सामाजिक, परिवारिक व देश के मसले हल हो सकते हैं। गुरू महाराज मनुष्य की जड़ों को पानी देने का काम करते हैं। पत्तों को पानी नहीं देते। मुझे खुशी है कि गुरू महाराज जी के चरणों में आकर कुछ न कुछ सेवाकारी होने के भाव जाग रहे हैं। श्री अकबरपुर मन्दिर, यहां और अन्य मन्दिरों को सुन्दर और हितकर बनाने के लिए सहयोग देने के वलवले उठ रहे हैं। अपने यहां मन्दिर बनाया है। चारों जगतों की सेवा के लिए कुछ न कुछ करने की ओर ध्यान जाता है। महोत्सव सम्बन्धी तैयारियों के लिए कुछ दिन पहले आने के विचार उठ रहे हैं। काश! अपना कुछ न कुछ भला कर सकूं।

श्री मनोज कुमार जी, मानसा- आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। मुझे मास्टर पंडित तेज राम जी कल्याण वाले के उपकार नज़र आ रहे हैं। उन्होंने मुझे यह दर दिखाया था। वह मुझे यहां अपना खर्च करके लाए थे। यहां आकर मुझे बहुत फायदा हुआ है। अपनी कमियों की कुछ कुछ समझ आई है। उनके पिछले साल परलोक चले जाने से उनकी बहुत कमी महसूस हो रही है। वह मुझे अपने बच्चों की तरह प्यार करते थे। मेरा और हमारे परिवार का बहुत ध्यान व ख्याल रखते थे। वह हमारा हमेशा भला चाहते थे और करते रहते थे। मैं इस दर के साथ जुड़ा रहना चाहता हूँ।

श्री सुभाष जी, श्री अकबरपुर - मैं सन् 1994 में इस दर पर आया था। सन् 1999 में गुरू महाराज का सेवक बनने का सौभाग्य मिला। मेरे जीवन में बड़ा परिवर्तन आया है। बहुत दुखी था, बहुत भला हुआ है। यहां पहुंचने में हम बेहद लेट हो गए। सुबह 9 बजे के करीब पहुंचना था और हम 16 दिसम्बर की रात 11 बजे के बाद यहां पहुंचे। हमारे लिए कई धर्म सम्बन्धी जाग रहे थे उन्होंने हमारे लिए खाना तैयार करवा रखा था। उन्होंने खुद भी खाना नहीं खाया था, हमारे साथ ही खाया। यहां आकर, सभाएं सुनकर बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। ऐसी सभाएं मैंने कहीं भी नहीं सुनी थी।। मैं महसूस करता हूँ कि इन सभाओं से हृदय में अच्छा उजाला हुआ है, इसका बयान नहीं कर सकता। यहां सभाओं में हृदय पिघलता रहा है। बहुत आराम और सेवा पाई है। बहुत कुछ नया ज्ञान मिला है। जो कुछ मिल रहा है, उसका बयान नहीं हो सकता।

डा० मुनशा सिंह जी, पदमपुर- मेरे अंदर प्रेरणाएं जागी हैं। उन्हें दबाने की कोशिश नहीं करूंगा। सेवाकारी बनकर अपना सच्चा भला करना है। इन सभाओं में आत्म दर्शन हुआ है। अपना आप नज़र आया है। अपने जीवन की नीचता नज़र आती रही है, हृदय को दुखी कर रही है। मैं मित्रघाती हूँ, मातापिता घाती हूँ, अपने उस्ताद या गुरू घाती हूं। एक मित्र से मैंने कम्बल लिया था, उसके रूपये नहीं दिए जो अब जल्दी से जल्दी दूंगा। एक डाक्टर साहिब से काफी दवाइया ली थीं, उनके पैसे अदा नहीं किए। कल सभा में और साधन में अपनी नीचता सामने लाकर मैं लगभग घंटा भर दुखी हो हो के रोता रहा। धन अनुरागी, वासना अनुरागी होकर अपना नाश किया है। यहां आकर आंखें खुलती हैं, होश आता है। मैं आत्म परिवर्तन विभाग

में सेवाकारी होकर काम करना चाहता हूं। काश! कुछ बन सकूं।

श्री सुरेश गोस्वामी जी, जयपुर- मैं सितम्बर में संगरूर सत्संग में शामिल हुआ था। वहां बहुत लाभ हुआ था। वहां सिग्रेट पीना बुरा लगा था। सिग्रेट पीना छोड़ना चाहता हूं। कभी कभी फिर पी लेता हूँ। मैं आज अभी से कभी सिग्रेट नहीं पिऊंगा। कल्याण सत्संग में आऊंगा। मैं इस स्थान के लिए 11 बड़ी दरियां दूंगा।

किशन सिंह जी चौहान, श्री अकबरपुर – यहां आकर बेहद खुशी मिली। इस स्थान को देख कर हृदय गद्गद हो गया। मैं 48 सालों से श्रीमान जी को देख रहा हूं। इनकी कृपा से मुझे इस दर का पता लगा। इन्होंने मेरा और मेरे परिवार का बहुत भला किया है। मेरे माता पिता ने, मेरी बहिनों ने, मेरे भाई साहिब ने, मेरे भतीजों ने भी इनकी सभाएं सुनी हैं। मेरे बच्चों का भी इन्होंने भला किया है। यहां आकर और यहां का वातावरण देख कर मैं धन्य धन्य हो रहा हूं।

भजनों की सभा सुनके बहुत ही खुशी हुई है। बीबी सरवजीत कौर जी ने जो भजन गाए हैं, ऐसा उच्च भजनों का गान मैंने पिछले 48 सालों में कभी नहीं सुना।

इस महोत्सव पर पहुंच कर और शामिल होकर सच्चा भला हुआ है। अपनी ओर ध्यान गया है। मैं अपनी कमियों को लिखने का साधन करके अपना भला करूंगा।

यहां आकर बहुत आराम और सेवा प्राप्त हुई है। नाश्ता और खाना बहुत अच्छा बनता रहा है।

श्रीमान जी मेरे और मेरे परिवार के उपकारी हैं। दिल में बार बार आता है, इनकी सेवा करूं, इनका झोला उठाऊं, इनके साथ पीछे पीछे चलूं और अपना भला करूं।

इस महोत्सव के पावन अवसर और वातावरण के लिए गुरू महाराज और सहायकारी शक्तियों और सेवाकारियों को जितना धन्यवाद दिया जाए, थोड़ा है।

श्रीमति वीरपाल कौर, समराला

बहुत श्रद्धा व सम्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव की जय!

बहुत ही चाव भाव के साथ सभा में आए और आकर मन धन्य धन्य हो गया कि कितनी मेहनत के साथ देवाश्रम को तैयार किया गया है। प्रवेश सभा सुनते ही अपनी बहुत सारी कमियां नज़र आने लगीं। मेरा भानजा और उसकी पत्नि मेरे साथ गिदड़वाहा से आए हैं। उन्हें भी सभाओं ने बहुत प्रभावित किया। उनका कहना है कि वो भी अपने में सुधार लाकर देव धर्म अपनाने की कोशिश करेंगे। मैं तुच्छ स्वयं तो कुछ नहीं कर सकती और सेवा पाकर मन भर जाता है। मैं सारे सेवाकारियों की बहुत धन्यवादी हूँ।

सुभाश अग्रवाल, पंचकूला- विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी

सत्य देव की जय! के साथ आपके चरणों में प्रणाम करता हूं आपकी लम्बी उमर की प्रार्थना करता हूं। आप हमें मोहत्सव पर व अन्य सत्संगों में बुला कर हमारा भला करते हैं। हमारे पिता जी हमें गुरू महाराज की शिक्षा से जोड़ गये उनका हमारे उपकर सब से बड़ा उपकार है वरना पता नहीं हमारा क्या होता। पिता जी ने लगभग सारी उमर देव समाज की सन्सथाओं में व अन्य सेवा कारी हो कर

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

अपना बहुत भला किया और हमारा भी भला कर गये। मुझे अपने मातापिता और उच्च परलोक सम्बन्धी जिन की वजह से हमारा भला हुआ है याद आते रहते हैं उनके उपकार याद आते हैं गुरू महाराज की शिक्षा हमारे घर में होने के कारण घर में पूर्ण मेल प्यार है, बच्चे बहुत सेवाकारी हैं, हर बात मान लेते हैं। सत्संग में आकर आत्मा के बारे सत शिक्षा जानने और ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। ऐसी शिक्षा कहीं और नहीं मिलती। गुरू निराले हैं। हमें अपने बच्चों को गुरू की शिक्षा से जोड़ कर उनका भला करना चाहिये। सब साथियों सेवकों से यही प्रार्थना है कि वह अपने बच्चों को सत्संगों में लायेगें तो उनके जीवन बचेंगे और अच्छे इन्सान बनेंगे, घरों में पूरी शान्ति प्यार का वातावरण बनेगा। अपने बच्चों को सेवक ज़रूर बनायें।
धन्यवाद।

<u>सिद्धार्थ सुपुत्र श्री चमन लाल, चण्डीगढ़</u>- इन सभाओं को सुनके मुझे यह फायदा हुआ कि हमारे माता पिता को इन सभाओं में आने की वजह से हमें देव समाज विरासत में ही मिल गई जिससे मुझे इतनी खुशी होती है, क्योंकि मेरे कलास में सारे बच्चे मांसाहारी हैं और बड़ा **Proud** महसूस करते हैं कि वह मासाहारी हैं। इस देव समाज में लाने का सबसे बड़ा हाथ है मां जी (श्रीमति विद्यावती जी खेड़ा) जो मेरे माता पिता को देव समाज में लेके आये। उनकी वजह से हम सब बुरी बातों से बचे हुए हैं। मुझे सब सभाएं बहुत अच्छी लगीं और बड़े पापा(**Dr. Vinod Khera**) और धर्म सिंह जी का लेक्चर बहुत अच्छा लगा। इन सभाओं को सुन के मुझे फायदा महसूस हुआ, जैसे कि जब कोई मास और शराब पीता हो तो मुझे बड़ा दुख होता है, और महसूस करता हूं कि इन सभाओं की वजह से हम इन सब चीजों से बचे हुए हैं और कई जगह लोग अपने माता-पिता को बुरा भला कहते हैं और उनकी हालत को समझते नहीं जिससे मुझे बड़ा दुख होता है और कई हानिकारक चीजें है जिससे हम बचे हुए हैं क्योंकि मैं इन सभाओं से जुड़ा हुआ हूँ इसलिए मैं यही चाहता हूँ कि मैं इन सभाओं में जुड़ा रहूं और मैं आगे से सारी सभाएँ **attend** करूंगा।

<u>पूजा सुपुत्री चमन सिंह</u> - सत्य देव की जय!!

आज मैं यह भाव प्रकाश करना चाहती हूं कि मुझे तथा मेरे परिवार को देवसमाज से जुड़ कर

बाकी शेष पेज 2 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts